हरिभूमि

महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि

रोहतक, सोमवार 27 अप्रैल 2026

12 नपा के नए भवन का कार्य 30 प्रतिशत पूरा...

12 एलसीएलओ कर्मचारियों का सीएम आवास घेरने...

खबर संक्षेप

सड़क हादसे में पति की मौत, पत्नी व बेटा गंभीर

नारनौल। सड़क हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि उसकी पत्नी व तीन साल का बेटा गंभीर रूप से घायल हो गया। घायलों को इलाज के लिए नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं मृतक का शव नागरिक अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए रखा गया। जानकारी के अनुसार गांव अकबरपुर रामू निवासी साहिल शनिवार शाम अपनी पत्नी उषा भारती 25 वर्ष व तीन साल के बेटे इशान के साथ बाइक पर सवार होकर अपनी ससुराल राजस्थान के झुंझुनूं जिले के गांव सागा की ओर जा रहा था। सूचना मिलते ही स्थानीय लोगों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया।

कनीना में एटीएम बदलकर 35 हजार निकाले, केस दर्ज

नारनौल। कनीना में एक युवक ने सीआरपीएफ से रिटायर्ड कर्मी का एटीएम बदल लिया। जिसके बाद उसके खाते से 35 हजार रुपये निकाल लिए। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव भड़फ निवासी बहादुर सिंह ने बताया कि वह सीआरपीएफ में लगा हुआ था। वह पेंशन के पैसे निकलवाने के लिए गया था। इसी दौरान वहां मौजूद एक व्यक्ति से उसका एटीएम कार्ड बदल गया। इसके बाद जब उसने अपना कार्ड देखा तो उस पर फिरोज नाम लिखा हुआ था। पीड़ित ने तुरंत इसकी सूचना एसबीआई बैंक के अधिकारियों को दी, मगर उन्होंने उसकी बात देर से सुनी। जिसके बाद उसके खाते को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया।

सुंदरह व धनौदा से व्यक्ति व युवक लापता

कनीना। गांव सुंदरह से एक 56 वर्षीय व्यक्ति लापता हो गया। इस बारे में मनीष ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसके पिता रूपचंद की दिमागी हालत ठीक नहीं है, जो सुबह 11 बजे बिना बताए कहीं चला गया। पुलिस ने केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी। दूसरी ओर धनौदा से 24 युवक लापता हो गया। उषा देवी ने पुलिस को बताया कि वह अपने मंदबुद्धि बेटे को घर छोड़कर नारनौल से दवा लेने गई थी। वापस आई तो उसका लड़का घर से गायब मिला।

सुनील बने बिजली यूनियन के यूनिट प्रधान

नारनौल। हरियाणा पॉवर कॉरपोरेशन अनुसूचित जाति/जनजाति एवं पिछड़ा कर्मचारी यूनियन ने आपसी सहमति से सुनील निनानियां को यूनिट प्रधान, वरिष्ठ उपप्रधान राकेश कुमार एएफएम, बाबूलाल को उपप्रधान, राजेश कुमार को सचिव, यूडीसी जयसिंह को सहसचिव, सत्यवान एएफएम को प्रेस सचिव और बीरसिंह फोरमैन को खजांची चुना गया।

45 गांवों में 3 करोड़ खर्च कर 450 टंकियों का निर्माण व करोड़ों की लागत से घर-घर लगवाए नलकूप, ग्रामीण अब भी प्यासे

70 लीटर प्रति व्यक्ति औसत से पानी सप्लाई का वायदा फाइलों में सिमटा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

डॉर्कजोन में शामिल नांगल चौधरी ब्लॉक के गांवों में 70 लीटर प्रति व्यक्ति की औसत से पेयजल सप्लाई की योजना बनी थी। जिसके अनुसार गांवों में करीब तीन करोड़ की लागत से 450 टंकियों का निर्माण भी हुआ था, जिनमें पानी नहीं पहुंचा। इसके बाद सरकार ने हर रसोई नल योजना क्रियाविंत कर दी। करोड़ों रुपये खर्च करके घरों में नलकूप लगाए गए, लेकिन विभाग करीब 20 फीसदी नलों में ही पेयजल सप्लाई कर पाया है। ऐसे में लोगों को वाटर टैंकर व निजी बोरवेलों ने पानी खरीदकर प्यास बुझानी पड़ रही है। आपको बता दें कि नांगल चौधरी ब्लॉक के ग्रामीणों की सुविधा के लिए विभाग ने विभिन्न गांवों में 350 से अधिक बोरवेल लगवाए थे। भूजल स्त्रोत सूखने के कारण 180 बोरवेल बंद हो चुके है, जो बोरवेल चालू हैं, उनसे ग्रामीणों की पेयजल आपूर्ति नहीं हो पाती। संकट बढ़ने पर विभाग ने गांवों में सार्वजनिक टंकियों के निर्माण की योजना बनाई थी। तर्क दिया गया कि सार्वजनिक टंकियों का निर्माण होने से पानी की बर्बादी पर अंकुश लगेगा। ब्लॉक के लगभग 45 गांवों में 480 टंकियों के निर्माण पर विभाग ने करीब तीन करोड़ रुपये खर्च किए, लेकिन पांच से सात महीने के बाद बोरवेलों के जलस्त्रोत सूख गए और 50 फीसदी टंकिया खाली रहने लगी। इसके बाद सरकार ने 70 लीटर प्रति व्यक्ति की औसत से ग्रामीणों को पेयजल सप्लाई करने का प्रपोजल तैयार किया। हर रसोई नल योजना क्रियाविंत करके गांवों में पाइप दबाने तथा नल लगाने के टैंडर छोड़े गए। गांव वाइज करोड़ों की लागत से पाइप बिछाकर घरों में नलकूप लगाए गए हैं, लेकिन 50 फीसदी नलकूपों में तीन दिन छोड़कर एक घंटे पानी सप्लाई होता है। अब 43 डिग्री तापमान में पानी की दोगुना डिमांड बढ़ गई है। आपूर्ति नहीं होने पर लोगों को वाटर टैंकर या निजी बोरवेलों से पानी खरीदकर प्यास बुझानी पड़ रही है।

नांगल चौधरी। पानी की टंकी। *फोटो : हरिभूमि*

पहाड़ों की तलहटी पर बसे गांवों के हालात खराब

विभागीय जानकारी के अनुसार पहाड़ों की तलहटी पर बसे नांगल दुर्गू, दौंखेरा, भेडंटी, गोलवा, मूसनोता, पाचनोता, बायल सहित 20 गांवों में गंभीर पेयजल संकट बना हुआ है, क्योंकि कैनाल बेस्ड नहरी पानी की सप्लाई डिमांड से 50 फीसदी तक कम मिलती है। जिस कारण ग्रामीणों को राशनिंग प्रणाली से पेयजल मुहैया कराया जाता है। जबकी पहाड़ों पर तपन अधिक होने के कारण करीब तीन गुणा डिमांड बढ़ गई। जिस कारण ग्रामीणों को पानी के लिए इधर-उधर भटकना पड़ रहा है।

पर्याप्त बारिश नहीं, कृष्णावती नदी का बहाव 30 साल से बंद, सूख रहे हैं जलस्रोत

शहबाजपुर, दताल, नांगल कालिया, नोलाजा के ग्रामीणों ने बताया कि बीते 30 साल से पर्याप्त बारिश नहीं हो रही है। जिस कारण कृष्णावती नदी का बहाव बंद होने से भूजलस्रोत तेजी से सूख रहे हैं। गांवों में पेयजल संकट उत्पन्न होने पर सरकार ने ब्लॉक को डार्कजोन घोषित कर दिया। जहां फसलों की सिंचाई तथा पेयजल व्यवस्था नहरी पानी पर निर्भर है, लेकिन 60 फीसदी गांव नहरों से अटेच नहीं नहीं है, ऐसे में ग्रामीणों की खेती और पेयजल की गंभीर समस्या बनी हुई है।

22 करोड़ की लागत से बनी सीसी वाली मुख्य सड़क पर दरारें

एक साल में उखड़ा नारनौल–धौलेड़ा मार्ग, गुणवत्ता पर उठ रहे सवाल

जगह-जगह टूट से लोगों में रोष आगे निर्माण जारी, पीछे से टूट रही सड़क ने बढ़ाई परेशानी, चार करोड़ से बनाया है बिगोपुर डैम पर बाइपास

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

करोड़ों रुपये खर्च कर बनाई गई नारनौल–धौलेड़ा–मेघोत सड़क की एक साल के भीतर ही अपनी गुणवत्ता की पोल खुलने लगी है। करीब 15.150 किलोमीटर लंबी और सात मीटर चौड़ी इस सड़क का निर्माण पीडब्ल्यूडी विभाग की देखरेख में धर्मपाल एंड कंपनी द्वारा किया गया था, लेकिन हालत यह है कि जहां एक ओर सड़क का निर्माण कार्य अभी आगे चल रहा है, वहीं पीछे से बनी सड़क कई जगहों पर टूटकर बिखर चुकी है। यह सड़क नारनौल की अनाज मंडी के पास से शुरू होकर मेघोत के आगे निजामपुर रोड से जुड़ती है और इसके बीच लगभग एक दर्जन गांव पड़ते हैं। ऐसे में यह मार्ग क्षेत्र के लोगों के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। बावजूद इसके, सड़क की खराब हालत ने लोगों को निराश कर दिया है।

बता दें कि करीब तीन साल पहले तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल द्वारा इस सड़क के निर्माण को मंजूरी दी गई थी और इसके लिए 22 करोड़ रुपये का बजट स्वीकृत किया गया था। इसके अलावा धौलेड़ा क्षेत्र में बाइपास निर्माण के लिए चार करोड़ रुपये जिला माइनिंग फंड से अलग से मंजूर किए गए थे। सरकार ने इस सड़क को सीमेंट कंक्रीट (सीसी) के रूप में बनाने का निर्णय लिया था, ताकि क्षेत्र में चल रहे खनन कार्य और भारी वाहनों के दबाव को सहन किया जा सके। दरअसल, धौलेड़ा क्षेत्र माइनिंग जोन के रूप में जाना जाता है, जहां बड़ी संख्या में क्रेशर जोन संचालित हैं और खनन से भरे ओवरलोड डंपर दिन–रात लगातार आवाजाही करते हैं। पहले बनी तारकोल की सड़कें इन भारी वाहनों के कारण जल्दी टूट जाती थी, इसलिए सीसी सड़क को बेहतर विकल्प मानते हुए मंजूरी दी गई थी, लेकिन निर्माण के महज एक साल के भीतर ही सड़क का कई हिस्सों में टूटना और दरारें आना इस बात की ओर इशारा कर रहा है कि या तो निर्माण में गुणवत्ता का अभाव रहा या फिर भारी वाहनों का दबाव अपेक्षा से अधिक है। यदि भारी वाहनों के कारण यह सड़क टूट रही है तो जिले के आरटीए विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो रहे हैं, क्योंकि इससे सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंच रहा है। पुलिस इन ओवरलोड डंपरों के खिलाफ प्रॉपर्टी को डैमेज करने के एक्ट में कार्रवाई नहीं कर रही। यह पता नहीं, इनकी आपसी मिलीभगत से खेल चल रहा है या कुछ ओर है, लेकिन ओवरलोड के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। इस कार्य में सुधार के लिए आमजन काफी बार शिकायत कर चुके हैं।

नारनौल। पुनर्निर्माण के लिए तोड़ी गई क्षतिग्रस्त सड़क। *फोटो : हरिभूमि*

नारनौल। मरम्मत के लिए सड़क पर डाला गया विशेष लेप। *फोटो : हरिभूमि*

मरम्मत में जुटी एजेंसी, लोगों को नहीं मिल रही राहत

सड़क के टूटने के बाद अब निर्माण एजेंसी द्वारा कई स्थानों पर टूटी हुई सड़क को दोबारा तोड़कर नया निर्माण किया जा रहा है। वहीं, कुछ जगहों पर विशेष घोल डालकर मरम्मत का कार्य किया जा रहा है। इसके चलते राहगीरों और स्थानीय लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। लोगों का कहना है कि करोड़ों रुपये खर्च करने के बावजूद यदि सड़क इतनी जल्दी खराब हो जाए तो यह सरकारी धन की बर्बादी है। ग्रामीणों ने इस पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग की है, ताकि निर्माण में हुई संभावित लापरवाही सामने आ सके। फिलहाल, सड़क की मौजूदा स्थिति ने विकास कार्यों की गुणवत्ता पर सवाल खड़े कर दिए हैं। अब देखना यह होगा कि संबंधित विभाग इस मामले में कितनी गंभीरता दिखाता है और लोगों को कब तक बेहतर व टिकाऊ सड़क उपलब्ध हो पाती है।

विभाग का दावा: नहीं आने देंगे परेशानी

पीडब्ल्यूडी विभाग के जेई विकास कुमार ने बताया कि जहां-जहां सड़क कमजोर होकर टूट रही है, वहां दोबारा निर्माण किया जा रहा है। जबकि जिन स्थानों पर मरम्मत से काम चल सकता है, वहां मरम्मत की जा रही है। उन्होंने कहा कि विभाग का प्रयास है कि लोगों को किसी प्रकार की असुविधा न हो और सड़क को जल्द ही पूरी तरह दुरुस्त कर दिया जाएगा।

सड़क किनारे रेहड़ी पर मिला युवक का शव

नारनौल। मौके पर एकत्रित हुई लोगों की भीड़। *फोटो : हरिभूमि*

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शहर में रेवाड़ी रोड स्थित महावीर चौक के पास रविवार सुबह को उस समय हड़कंप मच गया, जब मुख्य मार्ग पर सड़क किनारे एक रेहड़ी पर अज्ञात युवक का शव पड़ा मिला। शव का आधा हिस्सा रेहड़ी से नीचे लटका हुआ था, जिसे देखकर राहगीरों व स्थानीय लोगों की भीड़ मौके पर जमा हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस चौकी प्रभारी पंकज कुमार टीम सहित मौके पर पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू की। पुलिस अधिकारी ने बताया कि उन्हें जगदीश निवास के पास एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने की सूचना मिली थी। मौके पर पहुंचकर जांच की गई और शिनाख्त की प्रक्रिया शुरू की गई। बाद में परिवार से संपर्क कर सूचना दे दी गई। परिजनों से बातचीत भी की गई है। पुलिस के अनुसार फिलहाल मौत के स्पष्ट कारणों का पता नहीं चल पाया है। आशंका जताई जा रही है कि युवक की मौत बीमारी के कारण भी हो सकती है, लेकिन अन्य पहलुओं को भी ध्यान में रखते हुए जांच जारी है। शव के पास शराब की कोई बोतल या संदिग्ध वस्तु बरामद नहीं हुई, जबकि पास में ही शराब का ठेका स्थित है।

वार्ड 22 में गहराया पेयजल संकट, टैंकरों पर निर्भर लोग

नारनौल। शहर के वार्ड नंबर 22 में इन दिनों पेयजल संकट ने विकराल रूप धारण कर लिया है। हालात ऐसे हैं कि वार्ड के मोहल्ला रावका, छिप्पी जोहड़ तथा सैनी स्कूल के आसपास रहने वाले लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। नियमित जल आपूर्ति ठप होने से आमजन में रोष बढ़ता जा रहा है और लोग महंगे दामों पर पानी के टैंकर मंगवाने को मजबूर हैं। स्थानीय लोगों के अनुसार कई दिनों से क्षेत्र में दिन में एकबार भी पानी की सप्लाई नहीं हो रही है। मजबूरी में परिवारों को 400 से 500 रुपये खर्च कर पानी के टैंकर डलवाने पड़ रहे हैं, जिससे उनकी जेब पर अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है। खासकर गर्मी के मौसम में यह समस्या और भी गंभीर होती जा रही है। वार्ड के पार्षद अमर सिंह ने बताया कि इन इलाकों में पानी की सप्लाई मोहल्ले में बने बूस्टिंग स्टेशन के माध्यम से की जाती है, जबकि पानी की आपूर्ति पटीकरा से होती है, लेकिन पिछले कुछ दिनों से जनस्वास्थ्य विभाग की लापरवाही के चलते सप्लाई पूरी तरह से बाधित है।

नपा चुनाव में आज होगी नामांकन पत्रों की जांच

कनीना। नपा के वार्ड संख्या 14 के लिए 10 मई को होने वाले उपचुनाव को लेकर शनिवार तक दाखिल किए गए नामांकन पत्रों की सोमवार को जांच की जाएगी। बता दें कि कुल आठ प्रत्याशियों के नामांकन पत्र दाखिल हुए। एसडीएम डॉ. जितेंद्र सिंह अहलावत बताया कि सोमवार प्रातः 11.30 बजे नामांकन पत्रों की जांच की जाएगी। उन्होंने बताया कि 28 को सुबह 11 बजे से दोपहर तीन बजे तक नाम वापसी का समय निर्धारित किया गया है। इसके बाद प्रत्याशियों को चुनाव चिह्न आवंटित किए जाएंगे।

डुअल ओटीपी सिस्टम से नागरिकों को मिलेगी सुरक्षा, दहशत व ब्लैकमेलिंग से होगा बचाव

अभेद्य ऐप: सुरक्षा का डिजिटल कवच, बुजुर्ग खाताधारकों के लिए उपयोगी

- ऐप से एक्सटॉर्शन कॉल्स व धमकियों से बचाव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

डिजिटल धोखाधड़ी, डिजिटल अरेस्ट व एक्सटॉर्शन कॉल्स (रंगदारी के लिए फोन) जैसे अपराधों से आम जनता और वरिष्ठ नागरिकों को सुरक्षित रखने के लिए पुलिस की ओर से दो अत्यंत महत्वपूर्ण तकनीकी कदम उठाए गए हैं। नागरिकों को जागरूक और सुरक्षित करने के उद्देश्य से यह सूचना जारी की जा रही है। यह एक आधुनिक मोबाइल आधारित सुरक्षा प्लेटफॉर्म है, जिसे अपराधियों की ओर से किए जाने वाले मानसिक उत्पीड़न और धमकियों को रोकने के लिए तैयार किया गया है।

ऑटोमैटिक ब्लॉकिंग: यह ऐप अंतरराष्ट्रीय, वर्चुअल या मास्क किए गए अनजान नंबरों से आने वाली संदिग्ध कॉल्स और व्हाट्सएप संदेशों को आप तक पहुंचने से पहले ही ब्लॉक कर देता है। जिससे अपराधियों की ओर से फैलाई जाने वाली दहशत और ब्लैकमेलिंग से बचाव होता है। भले ही कॉल आपके पास न पहुंचे, लेकिन बैकएंड पर पुलिस इन नंबरों का डेटा सुरक्षित रखती है, ताकि अपराधियों को ट्रैक करके उन पर सख्त कार्रवाई की जा सके।

नारनौल। अभेद्य ऐप। *फोटो : हरिभूमि*

डुअल ओटीपी सिस्टम: डिजिटल अरेस्ट से बचाव

जालसाज वीडियो कॉल पर फर्जी पुलिस या जांच अधिकारी बनकर लोगों को डराते हैं और उन्हें अकेले में पैसे ट्रांसफर करने पर मजबूर करते हैं। जिसे डिजिटल अरेस्ट कहा जाता है। वरिष्ठ नागरिकों को इस धोखे से बचाने के लिए एचडीएफसी बैंक के सहयोग से डुअल ओटीपी सिस्टम शुरू किया गया है। इसके लिए अन्य बैंकों के साथ भी मीटिंग की गई है। यह प्रणाली विशेष रूप से 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के खाताधारकों के लिए तैयार की गई है।

कैसे करता है काम: बड़े फंड ट्रांसफर के दौरान, लेन देन का ओटीपी केवल खाताधारक को ही नहीं, बल्कि उसकी ओर से चुने गए एक भरोसेमंद परिवार के सदस्य के मोबाइल नंबर पर भी भेजा जाएगा। खाते से पैसा तभी ट्रांसफर होगा, जब दोनों ओटीपी खाताधारक और परिजन का दर्ज किए जाएंगे। इससे परिवार के सदस्य अलर्ट हो जाते हैं और डर या जल्दबाजी में होने वाली आर्थिक ठगी तुरंत रुक जाती है।

आम जनता से अपील

- धमकी भरे अनजान कॉल्स और संदेशों से बचने के लिए अभेद्य ऐप का उपयोग करें।
- घर के बुजुर्गों 60 आयु के बैंक खातों में डुअल ओटीपी सुविधा सक्रिय कराएं और किसी विश्वसनीय परिजन का नंबर रजिस्टर करें।
- याद रखें, कोई भी सरकारी एजेंसी कभी भी वीडियो कॉल के माध्यम से किसी को अरेस्ट नहीं करती है।

गांवों के नाम रागों पर आधारित

हरियाणा में राग परंपरा, जिसे लोकगीतों के रूप में भी जाना जाता है, का एक समृद्ध इतिहास है। यहां तक कि कस्बों के नाम भी पारंपरिक रागों से लिए गए हैं। दादरी तहसील में कई बस्तियों के नाम प्रसिद्ध रागों से जुड़े हैं। इनमें नंदयम, सारंगपुर, बिलावाला, बृंदाबाना, टोडी, असावेरी, जयश्री, मलकोष्णा, हिंडोला, भैरवी और गोपी कल्याण आदि शामिल हैं। वहीं, जींद जिले में जय जय वंती, मालवी और अन्य संस्थाएं पाई जा सकती हैं।

हरियाणवी लोकगीतों में सात्विक प्रेम और विरह

हरियाणवी लोक-साहित्य का एक दूसरा पहलू भी है जो बहुत कोमल, संवेदनशील और सात्विक है। यह वह प्रेम है जिसे हम 'सात्विक' कह सकते हैं, क्योंकि इसमें कोई वासना नहीं है, कोई दिखावा नहीं है। यह प्रेम पति-पत्नी के उस अटूट रिश्ते पर आधारित है, जहां समर्पण ही सबसे बड़ा सुख है।

संस्कृति

दिनेश शर्मा 'दिनेश'

लोकगीत किसी भी समाज की आत्मा होते हैं। जब हम हरियाणा की बात करते हैं, तो अक्सर लोगों का ध्यान यहां की वीरता, कुश्ती के मैदानों की तरफ जाता है। लेकिन, हरियाणवी लोक-साहित्य का एक दूसरा पहलू भी है जो बहुत कोमल, संवेदनशील और सात्विक है। यह वह प्रेम है जिसे हम 'सात्विक' कह सकते हैं, क्योंकि इसमें कोई वासना नहीं है, कोई दिखावा नहीं है। यह प्रेम पति-पत्नी के उस अटूट रिश्ते पर आधारित है, जहां समर्पण ही सबसे बड़ा सुख है। आज हम हरियाणवी लोकगीतों के आईने में उस प्रेम और विरह को देखने की कोशिश करेंगे, जो हमारी माटी की असल पहचान है।

हरियाणवी लोकगीतों में विरह केवल एक शब्द नहीं, बल्कि एक अनुभव है। यहां का लोक-मानस प्रकृति के साथ इतना जुड़ा हुआ है कि मौसम बदलते ही मन की अवस्था भी बदल जाती है। जब पिया परदेश में हो, तो सावन की फुहारें या कोयल की कूक किसी कांटे की तरह चुभने लगती है। एक स्त्री जब अपने पिया के वियोग में होती है, तो वह प्रकृति को ही अपना साथी मान लेती है। हरियाणवी लोक-साहित्य में मौजूद 'बारामासा' गीत में एक स्त्री का अपने प्रिय के प्रति सात्विक मोह और समाज की ओर से पूछे जाने वाले सवालों का जवाब देखिए:

आम्बों की ठंडी सी छांह, निंबों नीचे क्यूं खड़ी?
के तेरे पिया परदेस, के तेरी सास बुरी?
उड़ जा रे काले से काग, तन्नै मेरी के पड़ी?
ना मेरे पिया परदेस, ना है मेरी सास बुरी।
आया है साढ़ज मास, आवैं घन घोर कै,
जो घर होत्ते म्हारे लाल, बंगला छुवावते।

इस गीत में स्त्री की जो मर्यादा है, वह काबिले तारीफ है। वह स्त्री अपनी निजी पीड़ा को सार्वजनिक नहीं करती। वह अपनी गरिमा बनाए रखती है। जब मन में विरह की आग जल रही हो, तो बाहर की हर सुरीली चीज़ भी शोर लगने लगती है। कोयल की आवाज़ जो वसंत में लोगों को मोह लेती है, एक विरहिणी के लिए बेचैनी का कारण बन जाती है। यहां लोकगीत की वह गहराई देखिए, जहां वह कोयल से ही संवाद करने लगती है:

मेरे पिया गए परदेस, कोयलिया क्यूं बोल्लै सै।
यो सै मेरे पिया जी का नां, कोयलिया क्यूं बोल्लै सै।
तूं तै काली बणी भगवान, काम्मण उनकी गोरी सै।
मेरे मन म्हं उठैं सै हिलोर, तूं काल क्यूं हो री सै।
तूं तै काले बादल की गैल, उड़ जा री अम्बर म्हं।
बेबे! हम विरहण की रात कटै सै पीहर म्हं।

यहां नायिका को लगता है कि कोयल उसे उसके प्रिय की याद दिलाकर सता रही है। वह कोयल से ही शिकायत करती है कि तू क्यों बोल रही है? क्या तुझे पता है कि मेरे पिया परदेश में हैं? यह लोक-साहित्य का वह जादू है, जहां निर्जीव और सजीव को एक ही धागे में पिरो दिया गया है। पीहर (मायके) में बैठी वह नायिका, अपने पति से दूर है, और उसकी टीस इन शब्दों में साफ़ झलकती है।

पुराने समय में चिट्ठी का आना किसी बड़े आयोजन से कम नहीं था। चिट्ठी में लिखे शब्द प्रियतम की उपस्थिति का अहसास कराते थे। लेकिन उन शब्दों को पढ़ना और फिर रो पड़ना, यह एक विरहिणी की सहज प्रतिक्रिया है। जब सहेलियां घेरा डाल कर पूछती हैं कि जीजा जी ने क्या लिखा है, तो उस बेचारी का हाल देखिए:

बांचत बांचत हुई हाल बेहाल,
आंख्यां तैं आंसू ढारती
हाय री, अभागण नार,
पिया बिन दिन एकली काटती।

हरियाणवी लोकगीतों की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वे महलों की कहानियां नहीं सुनाते, बल्कि खेतों में पसीना बहाने वाली आम औरत की कहानी सुनाते हैं। यहां का प्रेम भी मेहनत से जुड़ा है। काम के बीच पिया की याद आना, यह दिखाता है कि प्रेम कोई अलग से किया जाने वाला काम नहीं, बल्कि जीने का एक हिस्सा है। देखिए, खेत में काम करती एक स्त्री जब अपने पति से मिलती है:

मेरे पिया की चिट्ठी आई बेबे ए छुट्टी मिलदी ना मूल
सिर पर घड़वा कांधै पै कसौल्ला बेबे हे
ईख नुलावण जांसीसम निच्चै घड़वा तार्या बेबे ए
बीघे का धर लिया घेर सारे सरीर पै तै आया पसिन्ना बेबे ए मुट्ठी हो गई लाल''

इस गीत में प्रेम का एक व्यावहारिक पक्ष दृष्टिगोचर होता है। पति का आना, काम छोड़ कर उसे लेने जाना, और फिर घर की बातें करना, यह जीवन का सबसे सुंदर दृश्य है। यहां यह दर्शाया गया है कि पति-पत्नी का रिश्ता केवल दो लोगों का नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ी का आधार भी है। यह सात्विक प्रेम है, जहां पसीने की गंध में भी प्यार की खुशबू है। बुढ़ापे में या तन्हाई में इंसान अपने अतीत की उन छोटी-छोटी बातों को याद करता है जो कभी सामान्य लगती थीं, लेकिन अब बहुत कीमती हो गई हैं। पति-पत्नी का साथ नहाना, साथ खाना, और वो 'मस्त' हो जाना, ये बातें आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में गायब होती जा रही हैं। लोकगीत हमें उसी सादगी की याद दिलाते हैं:

ये जुल्मी नैण बुरे कोए दिन याद करो
एक न्हाणा न्हाण आले दो जणैन्हा
न्हा मस्त हुए कोए दिन याद करो
एक खाणा खाण आले दो जणै

कितनी गहरी बात कही गई है! 'जुल्मी नैण' जो उन पुराने दिनों को याद करके दुखी हो रहे हैं। वह समय जब दो लोग साथ खाते-पीते थे और खुश रहते थे। यह प्रेम का वह शुद्ध रूप है, जहां किसी बड़े उपहार की आवश्यकता नहीं थी, बस साथ होना ही काफी था। सुख कहीं बाहर नहीं, बल्कि अपने ही घर में, अपने साथी के साथ बिताए गए पलों में है। हरियाणवी लोकगीतों में नायक और नायिका का संवाद बहुत चतुर होता है। वे सीधे-सीधे बात नहीं कहते, बल्कि गीतों के माध्यम से अपनी बात रखते हैं। यहां देखिए एक नायक जब अपनी नायिका से मिलने का बहाना ढूंढता है, तो वह कैसे अपनी चतुराई और मर्यादा का परिचय देती है:

हो रास्ते में पड़ गयो झील, छैल तेरे आने जाने में
हो तेरा बाप घर पर नहीं, छैल तेरी मय्या बुला रही सै
हो मेरी अम्मां गंगा नीर, नीर के दोष लगावो मत ना
हो तेरा भय्या घर पर नहीं, छैल तेरी भाभी बुला रही सै

हरियाणवी लोक गीतों में जो सात्विक प्रेम और विरह का वर्णन है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर है। यह धरोहर हमें बताती है कि कैसे जीवन को सादगी से जीना है और कैसे रिश्तों को बिना किसी दिखावे के, केवल प्रेम और विश्वास से सींचना है। ये लोकगीत हमारे इतिहास के वो पन्ने हैं जिन्हें अगर हम मिटने देंगे, तो हम अपनी पहचान खो देंगे। इसलिए, इन गीतों का गायन और इनका चिंतन, हमारे लिए एक सांस्कृतिक कर्तव्य भी है। हरियाणवी लोक-साहित्य का यह 'सात्विक प्रेम' सदा जीवंत रहे, यही कामना है।

यह गीत भारतीय संस्कृति का एक बेहतरीन उदाहरण है। नायक उसे बुलाने के लिए घर के हर सदस्य का नाम लेता है, लेकिन नायिका हर सदस्य को एक पवित्र चीज़ (गंगा नीर, जमुना नीर, कच्चा दूध) से जोड़कर उसे गलत साबित कर देती है। यह प्रेम में भी एक नैतिक मर्यादा का पालन है। यहां कोई वासना नहीं है, बल्कि एक-दूसरे को परखने और मर्यादा में रहने का एक अनूठा खेल है। हरियाणवी स्त्री का यह 'सतीत्व' और 'मर्यादा' लोक गीतों में ही सुरक्षित है।

हमारे यहां अतिथि को भगवान माना गया है, और जब वह अतिथि स्वयं 'प्रियतम' हो, तो सेवा का भाव और भी बढ़ जाता है। पत्नी अपने पति के लिए किस प्रकार का भाव रखती है, इसे देखिए:

म्हारे बाग का मिसरी मेवा चाख कै नै जाइये
तेरे हाथ की रै माली की रोटी ना भावै
कच्चे पाक्के फल तोड़ै मनै आच्छे ना लागैं
सेठ की सिठाणी पै तेरी रोटी पुआ द्यूंगी

यह केवल भोजन कराने का गीत नहीं है। यह प्रेम की वह पराकाष्ठा है, जहां एक पत्नी अपने पति को रोकना चाहती है। वह उसे अपने बगीचे का मेवा खिलाना चाहती है, उसे आराम देना चाहती है। असल में हरियाणा का लोक-साहित्य प्रेम और विरह को कभी भी रुग्ण या नकारात्मक नहीं मानता। यहां प्रेम केवल एक आकर्षण नहीं है, यह जीवन की एक बड़ी जिम्मेदारी है। पति-पत्नी का रिश्ता, जो इन गीतों का केंद्र है, वह त्याग और समझौते पर टिका है। चाहे वह परदेश जाने का दुःख हो या साथ बिताए पलों की याद, हरियाणवी लोक-गीतों ने इन भावनाओं को शब्दों की ऐसी माला में पिरोया है कि वे सदियों बाद भी ताजी लगती हैं। इन गीतों में वर्णित नायिका अबला नहीं है, वह एक सबल स्त्री है जो अपने परिवार के प्रति संवेदनशील है, अपनी मर्यादा के प्रति सजग है और अपने प्रियतम के प्रति समर्पित है।

अंत में, यही कह सकते हैं कि हरियाणवी लोक गीतों में जो सात्विक प्रेम और विरह का वर्णन है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर है। यह धरोहर हमें बताती है कि कैसे जीवन को सादगी से जीना है और कैसे रिश्तों को बिना किसी दिखावे के, केवल प्रेम और विश्वास से सींचना है। ये लोकगीत हमारे इतिहास के वो पन्ने हैं जिन्हें अगर हम मिटने देंगे, तो हम अपनी पहचान खो देंगे। इसलिए, इन गीतों का गायन और इनका चिंतन, हमारे लिए एक सांस्कृतिक कर्तव्य भी है। हरियाणवी लोक-साहित्य का यह 'सात्विक प्रेम' सदा जीवंत रहे, यही कामना है।

गजल | रामफल गौड़

हिम्मत करकै छोड़ उदास्सी

हिम्मत करकै छोड़ उदास्सी।
हांस हांस कै ले स्याबास्सी ।

इब इतिहास नवा लिखणा सै,
कथा पुराणी होल्यी बास्सी ।

अरधसरीरी नार सदा की,
मूरख कहण लगे थे दास्सी ।

करदे आच्छा काम कदे बी,
के मावस सै के पणवास्सी ।

भांड्डा फुट्टै च्योड़ै काल्लर,
कै दिन चाल्लैगी बदमास्सी ।

बण्या कैरियर जी की बाज्जी ,
करोंत पड़ै सै लेणा कांस्सी ।

आवैं बाळक ईब मिलण न्यूं,
पंछी हों ज्युक्कर परवास्सी।

सदा चालिए चाल आपणी,
नकल करण तै होसै हांस्सी।

कड़ै छणैं सैं दूध अर नीर,
हंस जड़ै आवैं फरमास्सी।

देख कुढंग गाम के रामफळ ,
लोग बणे इब सैह्र निवास्सी ।

रागिनी | भूपसिंह 'भारती'

मतना काटो पेड़ां नै

मतना काटो पेड़ां नै, न्यू कहरी बेटी थारी।
शुद्ध हवा हमनै दे कै, रखवाली करते म्हारी।।

लालच के चक्कर म्हा थम, कती नहीं शर्माए,
पाच्छै पड़ रहे पेड़ा कै, ये जंगल काट भगाये,
जै ये पेड़ नहीं बचाये, ना बचै ये दुनियादारी।

धरती का सिंगार करै, करकै ये हरियाली,
बरखा नै ये ले कै आवै, ल्यावै सै खुशहाली,
जंगल करो नहीं खाली, पेड़ा पै धरकै आरी।

धरती मां के घने लाडले, जन्म जन्म के साथी,
पर्यावरण शुद्ध करकै, ये बणते सदा हिमाती,
लूएं रोकै ताती ताती, दे सीली छाया प्यारी।

मीठे मीठे फल देवै, ये देवै भोजन पाणी,
पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ, कहै बात या बेटी याणी,
समझ 'भारती' बात या स्याणी, फेर खिलै फुलवारी।
मतना काटो पेड़ा नै, न्यू कहरी बेटी थारी।।

haribhoomisahitya@gmail.com पर आप अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

परिवेश | **आज के दौर में गांव को 'स्मार्ट' बनाने के साथ-साथ उसे फिर से 'संवेदनशील' बनाने की आवश्यकता**

चौपाल की गूंज से डिजिटल मौन तक

बदलाव | सरिता

हरियाणा की माटी की खुशबू केवल खेतों की सौंधी सुगंध में नहीं, बल्कि उन अनकहे रिश्तों और सांस्कृतिक ताने-बाने में रची-बसी थी, जो कभी गांवों की पहचान हुआ करते थे। आज जब हम हरियाणा के ग्रामीण परिवेश को देखते हैं तो पाते हैं कि यह बदलाव एक संपूर्ण 'जीवन-दर्शन' का रूपांतरण है।

कभी जो चौपालें गांव का हृदय हुआ करती थीं, आज वहां सन्नाटा पसरा है और भौतिक विकास की चकाचौंध के बीच मानवीय संवेदनाओं का अर्थ बदल गया है। कुछ दशकों पहले तक, हरियाणा के गांवों में 'भाईचारा' केवल एक शब्द नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक ढंग था। गांव की चौपाल महज ईंट-पत्थर का एक ढांचा न होकर गांव का 'सुप्रीम कोर्ट' और 'सांस्कृतिक केंद्र' थी। शाम ढलते ही चौपाल पर जो चर्चाएं होती थीं, उनमें राजनीति से लेकर सारे गाँव का सुख-दुःख, लोक-कला और रागनियों की समीक्षा तक शामिल होती थी। उस दौर में गांव की हर खुशी और हर गम साझा होता था। फसल की कटाई हो या किसी के घर विवाह, पूरा गांव एक परिवार की तरह खड़ा होता था। कुंओं की जगत पर महिलाओं का मिलना और लोकगीतों के माध्यम से सुख-दुख साझा करना, एक ऐसा 'सोशल नेटवर्क' था जो आज के डिजिटल युग से कहीं अधिक मजबूत था। आपको याद है ना .... 'मेरे सिर पै बंटा टोकणी' और 'पाणी लेण मैं तो कुंए पै गयी थी' ये लोकगीत शाम को कानों में पड़ते थे तो दिनभर की थकान दूर हो जाती थी। उस समय की भाषा में मिठास थी और व्यवहार में 'मान-मर्यादा' का भाव था। व्यक्ति अपनी पहचान से अधिक अपने गोत्र और गांव की प्रतिष्ठा के प्रति समर्पित रहता था। वहां तर्क के साथ-साथ 'लोक-विवेक' को अधिक महत्व दिया जाता था। समय का पहिया घूमा, तो ग्रामीण हरियाणा का भौतिक स्वरूप तेजी से बदलने लगा। कच्चे घरों की जगह कंक्रीट के बहुमंजिला मकानों ने ले ली। इस निर्माण के साथ ही 'आंगन' सिमट गए। संयुक्त परिवार, जो सुरक्षा और संस्कारों के संवाहक थे, एकल परिवारों में टूट गए। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी बड़ा बदलाव आया। खेती के साथ पशुपालन और पारंपरिक हस्तशिल्प की महत्ता कम होती गई। युवा पीढ़ी का झुकाव शहरों की ओर बढ़ा, जिससे गांवों में 'बुजुर्गों का अकेलापन' एक नई चुनौती बनकर उभरा। जो चौपाल कभी विचारों के आदान-प्रदान का केंद्र थी, वहां अब केवल बुजुर्गों की यादें शेष बची हैं या फिर वह केवल चुनाव के समय राजनीतिक अखाड़ा बन गई हैं। आज का ग्रामीण परिवेश एक अजीब से द्वंद्व में जी रहा है। एक तरफ भौतिक सुख-सुविधाएं हैं तो दूसरी तरफ मानसिक तनाव। मोबाइल और सोशल मीडिया ने गांव को वैश्विक दुनिया से तो जोड़ दिया है, लेकिन पड़ोसियों से दूरी भी बढ़ा दी है। अब लोग एक ही गांव में रहते हुए भी एक-दूसरे से डिजिटल तरीके से जुड़े हैं, लेकिन आमने-सामने बैठकर 'दिल की बात' करने का वक्त कम हो गया है। सबसे बड़ा बदलाव भाषा और संस्कारों में आया है। हरियाणवी बोली, जो अपनी ओजस्विता के लिए जानी जाती थी, वह आज अपनी शुद्धता खो रही है।

नई पीढ़ी के लिए लोक-साहित्य और रागनियों का स्थान अभद्र गीतों और फूहड़ता परोसती वेब सीरीज ने ले लिया है। सोशल मीडिया पर अश्लील और द्विअर्थी संवादों को लेकर सामग्री परोसकर लाइक और व्यूज बटोरते बुजुर्ग, महिलाएं तथा बच्चे बहुसंख्या में देखे जा सकते हैं। संस्कारों का वह ढांचा, जो नैतिकता और बड़ों के प्रति सम्मान पर टिका था, वह अब व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भेंट चढ़ता दिखाई दे रहा है। जब हम इन दो युगों की तुलना करते हैं, तो यह कहना कठिन है कि परिवर्तन पूरी तरह नकारात्मक है। आज का ग्रामीण हरियाणा अधिक शिक्षित है, जागरूक है और आर्थिक रूप से सशक्त भी। प्रश्न यह है कि क्या हमने विकास की दौड़ में अपनी जड़ों को सुरक्षित रखा है? प्राचीन हरियाणा में जो 'सामूहिकता' थी, वह आज की 'वैयक्तिकता' में कहीं खो गई है। पहले जहां व्यक्ति 'गांव का हिस्सा' था, वहीं आज वह 'दुनिया का नागरिक' बनने की होड़ में है। इस दौड़ में सबसे बड़ी क्षति 'लोक-स्मृतियों' की हुई है। दादा-दादी की कहानियों से मिलने वाले संस्कार और चौपालों पर मिलने वाले व्यावहारिक ज्ञान का स्थान अब गूगल और एआई ने ले लिया है।

हरियाणा के बदलते परिवेश को नकारना असंभव है, क्योंकि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। लेकिन सांस्कृतिक विस्थापन को रोकना हमारे हाथ में है। अगर हम उस सोच को, उस भाईचारे को, और उस लोक-चेतना को अपने जीवन में फिर से स्थान दे सकें, तो हम आधुनिकता के साथ-साथ अपनी जड़ों को भी जीवित रख पाएंगे। दरअसल आज के बदलते दौर में गांव को 'स्मार्ट' बनाने के साथ-साथ हमें उसे फिर से 'संवेदनशील' बनाने की आवश्यकता है। क्योंकि अंततः, एक समाज की असली पहचान उसके कंक्रीट के जंगलों से नहीं, बल्कि उस भाईचारे से होती है जो मुश्किल घड़ी में एक-दूसरे के काम आता है।

सांस्कृतिक विरासत के सजग प्रहरी हैं मुकेश काले

कलाकार | अंकुर शर्मा

हरियाणा की माटी और यहां की आबोहवा में रची-बसी रागनियों ने न केवल इस प्रदेश को वैश्विक स्तर पर पहचान दी है, बल्कि सामाजिक सरोकारों और सांस्कृतिक विरासत को भी जीवंत रखा है। जब हम हरियाणा के लोक रंग की चर्चा करते हैं, तो अक्सर हमारा ध्यान पुराने दौर के गायकों पर जाता है, लेकिन वर्तमान समय में रेवाड़ी जिले के एक युवा कलाकार ने आधुनिकता और परंपरा के बीच एक ऐसा सेतु बनाया है जिसने सबको अचंभित कर दिया है। यह नाम है-मुकेश काले। मुकेश काले, जिनका मूल नाम मुकेश जांगड़ा है, का जन्म 29 नवंबर, 1999 को हरियाणा के रेवाड़ी जिले के एक छोटे से गांव देहलावास गुलाबपुरा में हुआ।

इनके पिता श्री हरिप्रकाश और माता आशा देवी ने बचपन से ही उन्हें संस्कारों की घुट्टी पिलाई। ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े काले का मन बचपन से ही चौपालों में होने वाली भजन मंडलियों और रागनियों में रमता था, जहां वे गांव की मंडलियों और जागरणों का हिस्सा बनते थे।अक्सर यह माना जाता है कि उच्च शिक्षा और तकनीकी क्षेत्र में जाने के बाद युवा अपनी जड़ों से कट जाते हैं, लेकिन काले ने इस धारणा को गलत साबित किया। उन्होंने देश के प्रतिष्ठित संस्थान एनआईटी, कुरुक्षेत्र से बी.टेक. की डिग्री हासिल की और वर्तमान में भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड में एक इंजीनियर के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्षेत्र की व्यस्तताओं के बावजूद, उनके भीतर का कलाकार निरंतर सक्रिय रहा है। काले की गायकी की जड़ें उन दिग्गजों के सान्निध्य में गहरी हुई हैं, जिन्होंने रेडियो और सांग के माध्यम से हरियाणा की लोक कला को जीवित रखा। वे प्रेम सिंह देहाती, रेडियो कलाकार गुलाब सिंह खांडेवाल, निरंजन सांगी और गढ़वा लाइन के मास्टर सतबीर पालेराम दहिया को अपना आदर्श मानते हैं और लंबे समय तक उन्हें ही सुन-सुनकर सीखा है। उनकी लोकगीतों की ओर रुचि तब जगी, जब उन्होंने अनुभव किया कि पंडित लखमीचंद ने अपनी प्रसिद्ध रागनियों की धुनें लोकगीतों से ही प्रेरित होकर बनाई थीं। आज 'कइयो री खाती के लड़के ने', 'राम-लक्ष्मण दशरथ के बेटे' और 'दादा इस जांदे परदेस जाइये' उनके सबसे प्रिय लोकगीत हैं। मुकेश काले की सबसे बड़ी पहचान उनकी 'मोमेंटरी' गायकी है, जो किसी वाद्य यंत्र की मोहताज नहीं है। वे अक्सर एक साधारण मेज, स्कूल की बेंच या केवल अपने हाथ की थाप से ही वह लय पैदा कर देते हैं, जिसे सुनने के लिए लाखों लोग उनके सोशल मीडिया हैंडल पर उमड़ पड़ते हैं। उनका मानना है कि लोक संगीत लोगों के द्वारा, लोगों के लिए और लोगों के बीच ही जन्म लेता है। वे तर्क देते हैं कि जैसे कुम्हार बर्तन बनाते हुए या माताएं स्वेटर बुनते हुए गाती हैं, उन्हें किसी साज़ की ज़रूरत नहीं होती। संगीत अगर आपके भीतर है, तो वह कंप्यूटर पर काम करते हुए टेबल की थाप से भी प्रकट हो सकता है। उनकी इसी मौलिकता के कारण आज इंस्टाग्राम पर 62,000 और फेसबुक पर 36,000 से अधिक अनुयायी उनसे जुड़े हैं। काले केवल एक गायक ही नहीं, बल्कि एक गंभीर शोधार्थी भी हैं। वे उन 50-60 कवियों की रचनाओं को मुख्यधारा में लाना चाहते हैं जो समय के साथ दादा लखमीचंद और मांगेराम जैसे दिग्गजों के प्रभामंडल में कहीं ओझल हो गए। मुकेश काले इन विस्मृत रचनाओं पर निजी तौर पर शोध कर रहे हैं ताकि उन्हें पुनर्जीवित किया जा सके। उनका मुख्य ध्येय हरियाणा के 'लोक संगीत' को वैश्विक पहचान दिलाना है। वे भविष्य में एक 'हरियाणवी लोक बैंड' बनाने की दिशा में भी अग्रसर हैं, जो पारंपरिक रागनियों को अंतरराष्ट्रीय मंचों तक ले जा सके।'

मुकेश का सबसे बड़ा ध्येय पूर्णतः 'हरियाणवी' बनना है। वे सोशल मीडिया के माध्यम से हरियाणवी बोली को उसी मूल ध्वनि और उच्चारण में लिखना सीख रहे हैं, जैसा हम बोलते हैं, ताकि 'जेन-जी' पीढ़ी अपनी मातृभाषा की विशिष्टता को समझ सके।

मुकेश का सबसे बड़ा ध्येय पूर्णतः 'हरियाणवी' बनना है। वे सोशल मीडिया के माध्यम से हरियाणवी भाषा को उसी मूल ध्वनि और उच्चारण में लिखना सीख रहे हैं जैसा हम बोलते हैं, ताकि 'जेन-जी' पीढ़ी अपनी मातृभाषा की विशिष्टता को समझ सके। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समक्ष हरियाणा का 'स्वर्ण जयंती गीत' प्रस्तुत कर चुके काले सिद्ध कर रहे हैं कि आधुनिकता का अर्थ अपनी जड़ों को छोड़ना नहीं है। एक इंजीनियर की तार्किक बुद्धि और एक लोक कलाकार का संवेदनशील हृदय जब साथ मिलते हैं, तो मुकेश काले जैसी प्रतिभा का जन्म होता है। आज के 'अपसंस्कृति' के दौर में वे हरियाणा की सांस्कृतिक चेतना के एक मजबूत स्तंभ हैं। उनकी यह यात्रा उन तमाम युवाओं के लिए प्रेरणा है जो अपनी संस्कृति को 'पिछड़ा' मानकर उससे दूर भागते हैं।

खबर संक्षेप

भूरा भवानी मंदिर मे चलाया स्वच्छता अभियान

महेंद्रगढ़। स्वच्छता ही सेवा है, इस अभियान को लेकर माता भूरा भवानी मंदिर कमेटी सिसोठ के सदस्यों ने सफाई अभियान चलाकर माता भूरा भवानी मंदिर परिसर की सफाई की। मंदिर कमेटी के प्रेस सचिव एवं मिशन महेंद्रगढ़ अपना जल टीम के सदस्य मुकेश चौहान व मंदिर कमेटी के सह कोषाध्यक्ष शिवकुमार ने बताया कि जहां स्वच्छता होती है, वहां देवता का वास होता है और मन आनंदित रहता है। इसलिए प्रत्येक रविवार को मंदिर में सफाई अभियान चलाया जाता है।

समाजसेवी ओमप्रकाश यादव का निधन

महेंद्रगढ़। गांव मालड़ा बास निवासी लगभग 60 वर्षीय समाजसेवी ओमप्रकाश यादव पुत्र स्वर्गीय अमीलाल का गत दिवस निधन हो गया। उनके निधन से क्षेत्र में शोक की लहर है। ओमप्रकाश यादव का अंतिम संस्कार उनके पैतृक गांव मालड़ा बास में किया गया, जहां परिजन, रिश्तेदारों और ग्रामीणों ने नम आंखों से उन्हें अंतिम विदाई दी। स्वर्गीय ओमप्रकाश यादव लंबे समय से रेवाड़ी में अपने परिवार सहित निवास कर रहे थे।

गोसम्मान पर एसडीएम को सौंपेंगे ज्ञापन

कनीना। गोसंरक्षण व गोसम्मान को बढ़ावा देने के लिए गोसम्मान आह्वान अभियान के तहत 27 अप्रैल को विभिन्न सामाजिक संगठनों की ओर से एसडीएम को राज्यपाल व मुख्यमंत्री के नाम का ज्ञापन सौंपा जाएगा। सुबह सवा नौ बजे बाबा मोलडनाथ मंदिर प्रांगण में गोभक्त एकत्रित होंगे और पदयात्रा करते हुए एसडीएम कार्यालय पहुंचेंगे। इस बारे में कपूरी स्थित मनसा दास मंदिर के महंत राम भजन दास ने बताया कि यह अभियान सेवा, सुरक्षा और सम्मान जैसे मूल्यों पर आधारित है।

बंगाल में एक ही नारा चल रहा है चुपचाप, कमल पर छापः शर्मा

महेंद्रगढ़। पूर्व शिक्षा मंत्री रामबिलास शर्मा ने आम आदमी पार्टी के सात सांसदों के भाजपा में शामिल होने पर कहा कि ये सभी सांसद आप पार्टी में घुटन महसूस कर रहे थे। प्रो. शर्मा ने पश्चिम बंगाल में भाजपा 170 से 190 विधानसभा सीटें हासिल कर पूर्ण बहुमत की सरकार बनाएगी। उल्लेखनीय है कि कि पूर्व शिक्षा मंत्री रामबिलास शर्मा की पूर्व में दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान सहित कई राज्यों के चुनाव परिणाम से पहले चुनाव परिणामों को लेकर की गई भविष्यवाणियां सही साबित हुई हैं।

चलती बस में उठा धुआं बड़ा हादसा टला

नारनौल। शहर में एक चलती रोडवेज बस से अचानक धुआं उठने लगा। धुआं उठने पर ड्राइवर ने बस को रोड के साइड में रोक दिया। जिससे कोई बड़ा हादसा होते हुए टल गया। बस में करीब 30 सवारियां थी। हरियाणा रोडवेज डिपो की एक बस दोपहर को अलवर से नारनौल आ रही थी। बस रेवाड़ी रोड पर सीएल फार्म के पास थी। इस दौरान बस में पीछे के टायर के पास से धुआं उठने लगा। धुआं उठता देख चालक ने बस को रोक दिया।

प्रभात फेरी से भक्तिमय हुआ सुभाष नगर

नारनौल। शहर में राधे नाम की अलख जगाने वाली संस्था राधा कृष्ण प्रभात फेरी संगठन के तत्वावधान में पिछले तीन वर्षों से निरंतर संचालित प्रभात फेरियों की श्रृंखला में रविवार को 171वीं प्रभात फेरी का भव्य आयोजन सुभाष नगर से किया गया। प्रातः कालीन इस पावन आयोजन का शुभारंभ यजमान बिजेंद्र सैनी ने अपने नवनिर्मित निवास स्थान पर ठाकुर जी की आरती कर किया।

परशुराम पखवाड़े में बनाया पर्यावरण संरक्षण का पर्व

महेंद्रगढ़। क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण को लेकर एक प्रेरणादायक अभियान निरंतर गति पकड़ रहा है। परशुराम जन्मोत्सव पखवाड़े के पर पर्यावरणविद् डॉ. मनोज गौतम द्वारा चलाया जा रहा पौधा वितरण एवं पौधारोपण अभियान अब जनआंदोलन का रूप ले चुका है। डॉ. गौतम ने कहा कि भगवान परशुराम केवल शौर्य के प्रतीक नहीं, बल्कि प्रकृति के संरक्षक भी थे।

जनता ने पुलिस प्रशासन की कार्यप्रणाली पर उठाए सवाल

चोरी की घटनाओं पर अंकुश नहीं लगने से जनता में आक्रोश

बसों में सामान चोरी होने की घटना से यात्री चिंतित

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

पीड़ित महिला पूजा देवी।

थाना इंचार्ज राकेश कुमार।

घरों व ट्यूबवेलों से कीमती सामान चोरी होने के बाद बसों में चोरी की घटनाएं बढ़ने से यात्रियों की सुरक्षा सकते में है। यात्री इसे पुलिस प्रशासन की नाकामी का आरोप लगा रहे हैं। जिसके चलते चोर पकड़ना दूर की बात पुलिस समय रहते केस तक दर्ज नहीं कर रही है। पुलिस कर्मचारी अपने अपने थाना क्षेत्र को लेकर पल्ला झाड़ने का काम करते हैं। पुलिस के इस रवैये से पीड़ित मायूस होकर बैठ जाता है। ऐसा ही एक मामला 21 अप्रैल को घटित हुआ, जिसका केस थाना पुलिस ने 24 अप्रैल को दर्ज किया। इस बारे में पीड़ित महिला ने बताया कि उसे आर्थिक व मानसिक रूप से बेहद नुकसान हुआ है। पुलिस के ढीले रवैये के चलते जिसकी पूर्ति शायद नहीं हो सकती। इस बारे में प्रबुद्धजनों का कहना है कि पुलिस कर्मचारियों की लापरवाही से चोरी की घटनाओं पर अंकुश नहीं पा रहा। इससे पूर्व भी क्षेत्र के विभिन्न किसानों के ट्यूबवेलों से कृषि उपकरणों तथा घरों से कीमती सामान चोरी हुआ है, जो अभी तक अनसुलझी पहेली बनी हुई हैं।

पुलिस के ढीले रवैये से जनता हुई परेशान

बसों में की जा रही संदिग्धों की तलाश

इस बारे में सिटी थाना इंचार्ज एसआई राकेश कुमार ने बताया कि कनीना बस स्टैंड पर पुलिस कर्मचारियों की ओर से बसों में संदिग्ध व्यक्तियों की तलाश की जा रही है। महिला के साथ घटित हुई चोरी की घटना का शीघ्र ही पटाक्षेप किया जाएगा।

चोरों ने बैग काटकर उड़ाए नकदी व आभूषण

पीड़ित महिला पूजा देवी ने बताया कि अपनी ससुराल गोरिया दुधवा जिला झुंझुनू राजस्थान से अपने गांव नोसवा दादरी आ रही थी। सायं करीब तीन बजे वह नारनौल से कनीना के लिए चलने वाली स्टेट कैरिज बस में सामान के बैग के साथ सवार हुई। बैग में मंगलसूत्र, सोने, चांदी के आभूषण, जरूरी कागजात सहित करीब 15 हजार रुपये की नकदी थी। जानकारी मिलने पर पीड़िता ने सिटी थाने में शिकायत दी। जहां पुलिस की ओर से चोरों को पकड़ना तो दूर की बात पीड़िता की दरखास्त तक नहीं पकड़ी गई। पुलिस पहले तो इस घटना को टालती रही, लेकिन बाद में काफी आग्रह करने पर केस दर्ज किया गया।

साइंस ऑफ हैप्पीनेस पर व्याख्यान

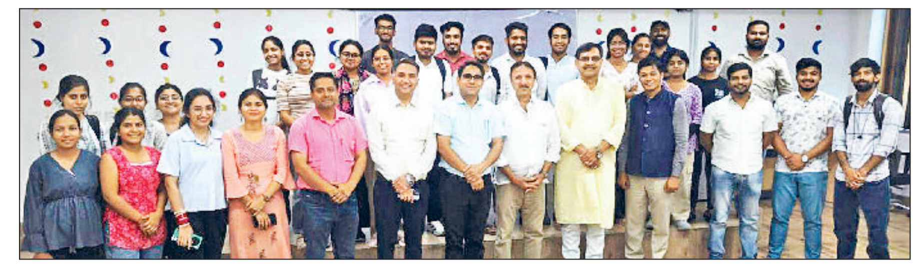
महेंद्रगढ़। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि। फोटो: हरिभूमि

- आंतरिक शांति व भावनात्मक संतुलन वास्तविक सफलता

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र एवं विधि विभाग के संयुक्त तत्वावधान में साइंस ऑफ हैप्पीनेस विषय पर एक विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन विधि विभाग में किया गया। इस अवसर पर लाइफ कोच महेश बजाज मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की उत्साहपूर्ण सहभागिता रही। कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि समस्त शिक्षा का अंतिम उद्देश्य एक सुखी और सार्थक जीवन की प्राप्ति है। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक उत्कृष्टता महत्वपूर्ण है, किंतु वास्तविक सफलता आंतरिक शांति, भावनात्मक संतुलन और सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास में निहित है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र एवं विधि विभाग द्वारा इस महत्वपूर्ण विषय पर व्याख्यान आयोजित करने के लिए सराहना की तथा विद्यार्थियों को साइंस ऑफ हैप्पीनेस के सिद्धांतों को अपनाकर अपने शैक्षणिक जीवन के साथ मानसिक स्वास्थ्य का संतुलन बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। विधि संकाय के अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष प्रो. प्रदीप सिंह ने कहा कि प्रसन्न मन स्पष्ट सोचता है, प्रभावी ढंग से तर्क करता है और न्याय के प्रति अधिक संवेदनशील होता है। उन्होंने विद्यार्थियों को ध्यान एवं माइंडफुलनेस को अपनी दिनचर्या में शामिल करने की सलाह दी, जिससे दीर्घकालिक सफलता एवं संतुष्टि प्राप्त की जा सके।

सकारात्मक अभ्यासों को दिनचर्या में अपनाए छात्र

मुख्य वक्ता महेश बजाज ने विद्यार्थियों के साथ संवाद करते हुए साइंस ऑफ हैप्पीनेस के विभिन्न आयामों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि नियमित ध्यान, आत्म-जागरूकता और सकारात्मक सोच से तनाव को कम किया जा सकता है, एकाग्रता बढ़ाई जा सकती है तथा जीवन में सकारात्मकता लाई जा सकती है। उन्होंने विद्यार्थियों को छोटे-छोटे सकारात्मक अभ्यासों को अपनी दिनचर्या में शामिल करने का आह्वान करते हुए कहा कि खुशी कोई दूरस्थ लक्ष्य नहीं, बल्कि एक विकसित की जाने वाली मानसिक अवस्था है। इस अवसर पर गुरुग्राम से समाजसेवी प्रदीप शर्मा भी उपस्थित रहे। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों को सेवा और संतोष के माध्यम से जीवन में सच्ची खुशी प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंत में इस व्याख्यान ने विद्यार्थियों को वास्तविक खुशी एवं मानसिक संतुलन प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

भाविप का दायित्व ग्रहण समारोह संपन्न

- मुकेश जैन अध्यक्ष व संदीप शुक्ला सचिव पद पर चयनित

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

भारत विकास परिषद शाखा के सत्र 2026-27 के पदाधिकारियों का दायित्व ग्रहण समारोह व परिवार मिलन कार्यक्रम गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डीएवी स्कूल के प्राचार्य राजेश कुमार अपने परिवार सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रांतीय उपाध्यक्ष राजकुमार यादव ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों के नामों की घोषणा करते हुए मुकेश जैन को अध्यक्ष, संदीप शुक्ला को सचिव व भगत सिंह सैनी को कोषाध्यक्ष पद का दायित्व सौंपा।

नारनौल। शपथ ग्रहण करते पदाधिकारी। फोटो: हरिभूमि

पद व गोपनियता की दिलाई शपथ

जिसके उपरांत क्षेत्रीय संयुक्त महासचिव महेन्द्र शर्मा ने दायित्व बोध पर प्रकाश डालते हुए नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई तथा परिषद के उद्देश्यों व सेवा कार्यों के प्रति समर्पण का संदेश दिया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष मुकेश जैन ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए सुचेता गोगिया को महिला संयोजिका, विजय जिन्दल को संपर्क संयोजक, सुनील चुघ को पर्यावरण संयोजक, पवन यादव को सेवा प्रकल्प संयोजक, डॉ. शिव कुमार को संस्कार प्रकल्प प्रमुख नियुक्त किया। साथ ही विशाल गोयल, नरेन्द्र गर्ग व अनिल भटेजा को परिषद के नए सदस्य के रूप में शपथ दिलाई ।

'सपने ऊंचे नहीं सच्चे होने चाहिए' फिल्म उत्सव में चयनित

- कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित रत्नावली उत्सव में बेस्ट चुनी गई फिल्म

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

रंगमंच और टीवी कलाकार शहर निवासी अनिल कौशिक की निर्देशित शॉर्ट फिल्म, सपने ऊंचे नहीं सच्चे होने चाहिए, का चयन अंतरराष्ट्रीय फिल्म उत्सव के लिए किया गया है। स्मरण रहे कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित रत्नावली उत्सव में इस फिल्म को बेस्ट शॉर्ट फिल्म अवार्ड मिल चुका है। एसवीएसयू विश्वविद्यालय के लिए निर्मित इस फिल्म को रत्नावली उत्सव कुरुक्षेत्र में बेस्ट शॉर्ट फिल्म में नवाजा गया। बता दें कि अंतरराष्ट्रीय फिल्म उत्सव में फिल्म सपने ऊंचे नहीं सच्चे होने चाहिए का अंतरराष्ट्रीय फिल्म उत्सव में चयन होने पर विवि कुलपति दिनेश कुमार ने युवा कार्यक्रम निदेशक अनिल कौशिक को बधाई दी। शीघ्र ही यह शॉर्ट फिल्म हरियाणा अंतरराष्ट्रीय फिल्म उत्सव में बेस्ट फिल्म के चयन के लिए रखी जाएगी। युवाओं को हुनर अनुसार स्किल शिक्षा पर जोर दिए जाने वाले विषय पर बनी फिल्म सपने ऊंचे नहीं सच्चे होने चाहिए की पटकथा व निर्देशन का कार्य महेंद्रगढ़ निवासी अनिल कौशिक ने किया है।

महेंद्रगढ़। फिल्म की शूटिंग करते निर्देशक अनिल कौशिक। फोटो: हरिभूमि

शार्ट मूवी शुरू

अनिल कौशिक के निर्देशन में हरियाणा पुलिस के लिए एंटी ड्रग्स विषय पर बनने वाली शॉर्ट मूवी के निर्माण का कार्य भी प्रारंभ कर दिया गया है। शीघ्र ही यह फिल्म विवि और शिक्षण संस्थाओं व पंचायतों में भेजी जाएगी। शीघ्र ही भारत सरकार का एनसीबी मंत्रालय भी उनके अनुभव को मान्यता प्रदान कर अलग से जिम्मेदारी सौंपने जा रहा है।

महेंद्रगढ़। ग्रामीणों को जागरूक करते हुए। फोटो: हरिभूमि

बास व खुडाना में चलाया नशा मुक्ति जागरूकता अभियान

महेंद्रगढ़। डोर-टू-डोर नशा मुक्त भारत अभियान के तहत समाज को नशा मुक्त करने के लिए जिला पुलिस द्वारा निरंतर ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में एसपी दीपक के दिशा-निर्देशों पर गठित विशेष टीम ने थाना सदर के अंतर्गत आने वाले गांव बास और खुडाना का दौरा किया। टीम ने गांव बास के मंदिर और गांव खुडाना की धर्मशाला में सभी वर्गों के लोगों को एकत्रित कर नशे के गंभीर दुष्प्रभावों पर विस्तार से चर्चा की। इस दौरान विशेष रूप से युवा वर्ग को नशे से दूर रहने और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। ग्रामीणों को मानस हेल्पलाइन नंबर 1933 के बारे में भी जागरूक किया गया। नशा मुक्ति के साथ-साथ पुलिस टीम ने आमजन को नए आपराधिक कानूनों के प्रति भी जागरूक किया। उपस्थित लोगों को भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के बारे में समझाया।

सुपरवाइजर रोशनी हुई सेवानिवृत्त

- पीएचसी मालडा बांस में स्वास्थ्य सुपरवाइजर के पद पर थी कार्यरत

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

पीएचसी मालडा बांस के स्वास्थ्य कर्मचारियों ने पीएचसी में कार्यरत स्वास्थ्य सुपरवाइजर रोशनी बाईं की सेवानिवृत्ति पूर्व एक सम्मान समारोह आयोजित किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पीएचसी इंचार्ज डॉ. पिंकी जांगड़ा और मंच संचालन स्वास्थ्यकर्मी मुकेश चौहान एवं अशोक देवनगर ने किया। सीएचसी नांगल सिरोही के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रतीक यादव मुख्यातिथि एवं डॉ. विश्वशक्ति, कर्मचारी नेता सुजान मालड़ा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। स्वास्थ्यकर्मी मुकेश चौहान व अशोक देवनगर ने बताया कि रोशनी बाई ने पीएचसी मालडा बांस में एमपीएचएस फीमेल के पद पर रहते हुए स्वास्थ्य विभाग में 34 वर्ष की अपनी सेवा पूरी की है। जिनकी आगामी 30 अप्रैल को सीएचसी नांगल सिरोही से सेवानिवृत हो रही है। मौके पर नर्सिंग ऑफिसर रेणु कुमारी, स्नेहा, सीएचओ बीरबल, डॉ. पूनम रैबारी, डॉ. विकास, महिला स्वास्थ्य कर्मी रोशनी देवी, सुनीता देवी, कमला, शर्मिला, कमला, रितु, आदि रहे।

महेंद्रगढ़। रोशनी बाई को सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

शॉल ओढ़ाकर किया सम्मानित

एसएमओ डॉ. प्रतीक यादव, पीएचसी इंचार्ज डॉ. पिंकी जांगड़ा, डॉ. विश्व शक्ति, स्वास्थ्य निरीक्षक रणबीर सिंह ने एलएचवी रोशनी बाईं को पगड़ी व माला पहनाकर एवं शॉल ओढाकर सम्मानित किया। मालडा बांस की नर्सिंग ऑफिसर, महिला एवं पुरुष स्वास्थ्य कर्मचारियों, सीएचओ, आईए, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों एवं आशा वर्कर सुनीता, मीना, अंजू ने भी उपहार देकर रोशनी बाईं को बधाई एवं शुभकामना दी।

आंबेडकर केवल दलितों के नेता नहीं समतामूलक समाज की पहचानः शिवताज

मंडी अटेली। डॉ. भीमराव अंबेडकर मंच बिहाली की ओर से गांव में अंबेडकर की 135वां जयंती समारोह बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. शिवताज सिंह थे। कार्यक्रम में बाबा साहब के विचारों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिसमें विभिन्न बच्चों को सम्मानित किया गया। वहीं कार्यक्रम में मिशनरी गायकों ने बाबा साहब के दर्शन व सघंर्षो को ओतप्रोत भजनों माध्यम से अपनी लोगों को जानकारी दी। मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्य डॉ. शिवताज सिंह ने कहा कि भीम राव अंबेडकर केवल दलितों के नेता नहीं थे, बल्कि मानवता के कल्याण व समाज को समतामूलक बनाने के लिए अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया। वे नारी मुक्तिदाता के साथ किसान, श्रमिकों के मसीहा भी रहे। उन्होंने भारत को अर्थशास्त्र का अध्ययन कर रिर्जव बैंक जैसी भारत वर्ष को अवधारणा दी। जब समाज का चिंतनशील वर्ग बाबा सहाब को पढ़कर अपने जीवन में लागू कर स्थापित अवधारणा को चुनौती देता है तो समाज में खलबली मचती है। वहीं बाबा साहब अंबेडकर महामानव के साथ सिंबल ऑफ नोलेज कहलाएं। वह वंचित, दबे-कुचले वर्ग के उत्थान के लिए जीवन भर लगे रहे।

हिसार में छात्र हित में महापंचायत आज

मंडी अटेली। जननायक जनता पार्टी द्वारा हिसार में 27 अप्रैल को छात्र हित महापंचायत आयोजित की जाएगी। यह महापंचायत क्रांतिमान पार्क में आयोजित होगी, जिसमें बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों और छात्रों के पहुंचने की संभावना है। जानकारी देते हुए अटेली हल्का प्रधान बेदु सिंह राता ने बताया कि 16-17 अप्रैल को हिसार में पुलिस एवं गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं और छात्रों के साथ कथित रूप से बदसलूकी की गई थी तथा उनके खिलाफ गलत तरीके से एफआईआर दर्ज की गई। इसी के विरोध में पार्टी हाईकमान ने महापंचायत आयोजित करने का निर्णय लिया है। जेजेपी के स्थानीय नेतृत्व ने जिला एवं अटेली क्षेत्र सहित आसपास के सभी कार्यकर्ताओं,युवा साथियों और क्षेत्रवासियों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में हिसार पहुंचकर महापंचायत को सफल बनाएं।

शिविर नीडी हेल्प ग्रुप व किशनलाल शिक्षा समिति ने लगाया शिविर

रक्तदान से बचाई जा सकती है कई जिंदगियां व दाता को बीमारियों से मिलती है निजात : गोयल

- हर्षित गोयल के 19वें जन्मदिन पर लगाया रक्तदान शिविर

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

नेकी की दीवार नीडी हेल्प ग्रुप व किशनलाल शिक्षा एवं जनकल्याण समिति के संयुक्त तत्वावधान में हर्षित गोगिया के 19वे जन्मदिन के अवसर पर नागरिक आस्पताल में रक्तदान शिविर लगाया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. प्रदीप कुमार एडीओ रहे। वही कार्यक्रम की अध्यक्षता दवा विक्रेता संगठन महेंद्रगढ़ के उपाध्यक्ष तुलसी गोयल ने की। विशिष्ट अतिथि वीरेंद्र दिवान, राकेश यादव सेकवाल रहे। कार्यक्रम आयोजक मनीष गोगिया ने सभी रक्तवीर योद्धाओं व नागरिक अस्पताल की पूरी टीम का आभार व्यक्त किया। इस दौरान डॉ. आनन्द व नरेंद्र जांगिड़ की अगुवाई में टीम ने 30 यूनिट एकत्रित किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि किसी भी अवसर पर रक्तदान की मुहिम न केवल सराहनीय है, बल्कि मानव सेवा में सर्वोत्तम कार्य है। तुलसी गोयल ने कहा कि रक्तदान करते रहना चाहिए, क्योंकि आपातकालीन में रक्त की कमी से किसी की जान नहीं जानी चाहिए। संस्था के संस्थापक मनीष गोगिया के मार्ग दर्शन में आयोजित इस शिविर में न केवल मानवता की मिसाल पेश की, बल्कि युवाओं में रक्तदान के प्रति एक नई ऊर्जा का संचार भी किया। वीरेंद्र दिवान व राकेश यादव ने कहा कि रक्तदान करने से किसी की जान तो बचाई जा सकती है, साथ में रक्तदाता के स्वयं के स्वास्थ्य के लिय भी अत्यंत लाभकारी है। मनीष गोगिया ने सभी युवाओं से अपील की कि इस तरह के आयोजन में बढ़ चढ़कर भाग ले। समाजसेवी मदनलाल गोगिया ने कहा कि रक्तदान महादान है। जब हम रक्तदान करते है, तो प्रत्यक्ष रूप से समाज की धड़कनों को चालू रखने में रखने में मदद करते है।

नारनौल। शिविर में रक्तदान करते हुए। फोटो: हरिभूमि

ये रहे उपस्थित

संस्था के स्टार डोनर साथी सुनील शर्मा ने अपने जीवन का 19वां रक्तदान भी किया। जिस तरह गर्मी बहुत पड़ रही थी, लेकिन युवाओं में जोश देखने को मिला है। उसको देखकर यह दर्शाता है कि आने वाली पीढ़ी सेवा कार्यों के लिय पूरी तरह जागरूक है। संस्था की ओर आए हुए सभी अतिथियों को पटका पहनाकर व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। शिविर में समाजसेवी गणेशीलाल कौशिक, सुनील गोयल, मदनलाल गोगिया, अनिल शर्मा, सुनील शर्मा, मनीष गोगिया, श्रीचंद सैनी, कौशल जांगड़ा, हिमांशी शर्मा, डिम्पल कादीपुरी, राकेश यादव, राघव गोगिया, हर्षित गोगिया आदि उपस्थित रहे।

मंडी में दोहरी रफ्तार सरकारी खरीद पटरी पर

मंडी अटेली। अनाज मंडी अटेली में इन दिनों खरीद का अनोखा संतुलन देखने को मिल रहा है, जहां सरकारी और प्राइवेट दोनों मोर्चों पर फसल की खरीद तेज गति से चल रही है। परविवार तक सरकारी एजेंसी ने 36 किसानों से 745 क्विंटल सरसों की खरीद कर उसे बैग में भरवा दिया है। खास बात यह रही कि करीब 800 बैग की लिफ्टिंग भी हो चुकी है जिससे पहले अटकी पड़ी फसल अब मंडी से बाहर निकलने लगी है। इससे किसानों को भुगतान मिलने का रास्ता भी साफ हो गया है। गेहूं की खरीद में भी तेजी आई है। अब तक 370 किसानों ने 10,698 क्विंटल गेहूं सरकारी एजेंसी को सौंपा है। जैसे-जैसे मौसम आगे बढ़ रहा है, गेहूं की आवक और बढ़ने की उम्मीद जताई जा रही है। दूसरी ओर प्राइवेट बाजार में सरसों की खरीद लगातार मजबूत बनी हुई है। 5,110 किसान अपनी 1,08,827 क्विंटल सरसों बेच चुके हैं। किसानों को करीब 6,450 रुपये प्रति क्विंटल तक भाव मिल रहा है।

30 अप्रैल तक खुद अपनी जानकारी पोर्टल पर दर्ज करें नागरिक

राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें नागरिक : डीसी

- जनगणना अधिनियम 1948 के तहत गोपनीयता की गांरटी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

उपायुक्त अनुपमा अंजलि ने जिलावासियों से आह्वान किया है कि जनगणना केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं बल्कि देश की प्रगति का आधार है। उन्होंने बताया कि दुनिया के इस सबसे बड़े जनगणना अभियान में आमजन की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है। आधुनिक तकनीक का लाभ उठाते हुए सरकार ने इस बार नागरिकों को सेल्फ एन्यूमरेशन यानी स्वयं गणना की सुविधा दी है, जिसके लिए आगामी 30 अप्रैल तक आधिकारिक पोर्टल खुला रहेगा। कोई भी नागरिक पोर्टल पर स्व जनगणना कर सकता है।

उपायुक्त ने नागरिकों को आश्वस्त किया कि उनकी व्यक्तिगत जानकारी पूरी तरह गोपनीय और सुरक्षित है। जनगणना अधिनियम 1948 के तहत आंकड़ों की गोपनीयता की कानूनी गारंटी दी गई है। यह डेटा सुरक्षित सर्वर पर एनक्रिप्टेड रूप में संग्रहित किया जाता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस डेटा का उपयोग किसी भी प्रकार की जांच, टैक्स या पुलिस कार्रवाई के लिए नहीं किया जा सकता। रिपोर्ट में केवल संकलित आंकड़े ही प्रकाशित किए जाते हैं और किसी व्यक्ति का नाम या पता किसी को नहीं दिया जाता। उन्होंने बताया कि पहले चरण में मकानों की सूचीकरण जनगणना 2027 के पहले चरण के तहत फिलहाल मकानों का सूचीकरण और मकानों की गणना का कार्य किया जा रहा है। उपायुक्त ने अपील की है कि जनगणना के लिए आने वाले कर्मचारियों को सही जानकारी दें और निडर होकर इस प्रक्रिया का हिस्सा बनें। उन्होंने स्पष्ट किया कि जनगणना की जिम्मेदारी केवल सरकारी कर्मचारियों की ही नहीं बल्कि हर प्रबुद्ध नागरिक की भी है।

उपायुक्त अनुपमा अंजलि

नागरिकों की सहायता व जानकारी के लिए जारी किया टोल-फ्री नंबर 1855

उपायुक्त अनुपमा अंजलि ने डिजिटल माध्यम का उपयोग करते हुए कोई भी नागरिक अपने परिवार का विवरण खुद भी भर सकता है। इससे न केवल समय की बचत होगी, बल्कि आंकड़ों की सटीकता भी सुनिश्चित होगी। किसी भी प्रकार की सहायता या जानकारी के लिए सरकार की ओर से टोल-फ्री नंबर 1855 भी जारी किया गया है। उपायुक्त ने अंत में संदेश दिया कि भरोसा भी, भागीदारी भी के मंत्र के साथ हम सभी को देश के विकास में अपना सहयोग देना चाहिए। नागरिकों की ओर से दी गई सही जानकारी ही भविष्य की योजनाओं और नीतियों के निर्माण में सहायक सिद्ध होगी।

जनवरी माह में विधायक कंवर सिंह ने किया था शिलान्यास

नपा के नए भवन का कार्य 30 प्रतिशत पूरा, दिवाली तक पूरा होने का अनुमान

करीब 4.36 करोड़ रुपये की लागत से करवाया जा रहा है निर्माण, आधुनिक सुविधाओं से होगा लैस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

आने वाले दिनों में नगर पालिका को नया भवन जल्द मिलने की संभावना है। ऑटो मार्केट के पीछे ठेकेदार की ओर से नगर पालिका का नए भवन का निर्माण कार्य युद्ध स्तर पर जारी हैं। नपा प्रधान का कहना है कि पहली मंजिल का लैंटर का कार्य हो चुका है। इसके अलावा भवन का करीब 30 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। नपा प्रधान के दावे पर यकीन करें तो नपा का नया भवन नवंबर महीने तक पूरा कर लिया जाएगा। बता दें कि ऑटो मार्केट के पीछे खाली जमीन पर नगर पालिका की ओर से नया भवन बनाने के लिए सरकार की ओर से करीब 4.36 करोड़ रुपये का टेंडर लगाया गया था। सभी प्रक्रिया पूरी करने के बाद जनवरी माह में विधायक कंवर सिंह ने इसका शिलान्यास किया था। नगर पालिका का नया भवन आधुनिक सुविधाओं से लैस होगा। करीब तीन एकड़ में खाली पड़ी नगर पालिका की जमीन पर पालिका ग्रांउड फ्लोर सहित दो मंजिला भवन बनाया जाएगा। सरकार की ओर से इसकी पहले ही स्वीकृति भी मिल चुकी थी। करीब 4.36 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाला नया भवन आधुनिक सुविधाओं से लैस होगा। वर्तमान में नगर पालिका कार्यालय शंकर मार्केट में स्थित है। यह कार्यालय 1991 में बनाया गया था। वर्तमान दौर में नगर पालिका कार्यालय में जगह का अभाव हैं। आने वाले लोग अपने वाहन को इधर उधर खड़ा कर देते हैं। इसके अलावा नगर पालिका कर्मचारी द्वारा अतिक्रमण हटाओ अभियान के दौरान उठाए गए सामान को भी रखने में दिक्कत का सामना करना पड़ता है। जगह के अभाव में पालिका ने नया भवन बनाने का निर्णय लिया गया था। सरकार से पहले ही स्वीकृति मिल चुकी थी। जल्द ही इसका कार्य पूरा कर लिया जाएगा।

महेंद्रगढ़। नपा के नए भवन में लैंटर लगाने का कार्य करते श्रमिक। फोटो : हरिभूमि

जल्द कार्य होगा पूरा

ऑटों मार्केट के पीछे करीब 4.36 करोड़ रुपये की लागत से नगर पालिका का नया भवन बनाया जा रहा हैं। नपा के नए भवन का कार्य करीब 30 प्रतिशत पूरा हो चुका हैं। इसके अलावा ठेकेदार द्वारा पहली मंजिल के कार्य का लैंटर भी लग चुका हैं। दिवाली तक इसका कार्य पूरा कर लिया जाएगा। निर्माण कार्य में सामाग्री में कोई कमी नहीं आने दी जाएंगी।

-रमेश सैनी, प्रधान, नगर पालिका, महेंद्रगढ़।

- हाल में शंकर मार्केट में स्थित है नगर निगम कार्यालय
- निगम कर्मचारी जगह के अभाव का कर रहे है सामना

यह सुविधाएं मिलेंगी

कार्यालय में दो मंजिला भवन होगा। ग्राउंड फ्लोर पर एडमिन ब्रांच होगा, जहां चेयरमैन, सचिव आदि के अलग-अलग कक्ष होंगे। इसी फ्लोर पर एक कांफ्रेंस हाल भी होगा। जहां पर एमई, जेई, पटवारी, बीआई के कक्ष होंगे। इसके अलावा अकाउंट ब्रांच भी इसी फ्लोर पर होगी। दूसरे फ्लोर पर महिला और महिला पुरुषों का अलग-अलग रैनबसेरा बनाया जाएगा। सभी फ्लोर पर पानी और शौचालय की व्यवस्था रहेगी। इसके अलावा भवन में लिफ्ट भी लगाई जाएगी। इसके साथ शॉपिंग कॉम्प्लेक्स व सार्वजनिक पार्किंग की सुविधा भी होगी।

एनसीसी व्यक्तित्व निर्माण का माध्यम: सिंह

- यदुवंशी शिक्षा निकेतन स्कूल में 21 से 30 अप्रैल तक होने वाले शिविर में 600 कैडेट्स व नौ पीआई ले रहे है भाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। एनसीसी कैडेट्स को संबोधित करते विधायक। फोटो : हरिभूमि

यदुवंशी शिक्षा निकेतन में हरियाणा नौसेना यूनिट एचआर एनसीसी फरीदाबाद नौसेना एनसीसी कैडेट्स के वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्यातिथि विधायक कंवर सिंह यादव ने शिरकत की। विधायक कंवर सिंह यादव ने बताया कि एनसीसी केवल एक प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं, बल्कि युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण का मजबूत माध्यम है। एनसीसी कैडेट्स में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और देशभक्ति की भावना विकसित होती है। जो उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। देश की सेवा के लिए समर्पण और अनुशासन सबसे महत्वपूर्ण गुण हैं। एनसीसी के माध्यम से युवा न केवल शारीरिक रूप से सशक्त बनते हैं, बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत होते हैं। विधायक ने कहा कि आज के युवा देश का भविष्य हैं और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कैडेट्स को प्रेरित करते हुए कहा कि वे अपने लक्ष्य निर्धारित करें और उसे हासिल करने के लिए पूरी मेहनत और लगन से कार्य करें। शिविर में कैम्प कमांडेंट भारतीय नौसेना के कप्तान विक्रम सेगत के उचित दिशा निर्देशन में नौसैनिक विषयों के साथ साथ व्यावहारिक विषयों जैसे ड्रिल, हथियार प्रशिक्षण, युद्धपोत प्रतिरोपण, आपातकालीन स्थिति में रोगी को कैसे प्राथमिक चिकित्सा देना और सेमाफोर इत्यादि का प्रशिक्षण करवाया जा रहा है। प्रशिक्षण शिविर 21 से 30 अप्रैल तक रहेगा। शिविर में 600 कैडेट्स और नौ पीआई स्टॉफ भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम के अंत मे कैम्प कमांडेंट भारतीय नौसेना कप्तान विक्रम सेगत ने विधायक कंवर सिंह यादव को स्मृति चिन्ह के रूप में पोत मॉडल भेंट किया गया।

महाराणा प्रताप की जयंती 10 मई को

नारनौल। आगामी 10 मई को गांव भोजावास में वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप की जयंती मनाई जाएगी। समारोह के मुख्य अतिथि प्रमुख राजनेता एवं समाजसेवी ठाकुर अतरलाल, प्रदेश अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ट्रस्ट हरियाणा अशोक कुमार चौहान, जिला अध्यक्ष राजपूत सभा गुरुग्राम अरुण सिंह चौहान एडवोकेट, जिला अध्यक्ष राजपूत प्रतिनिधि सभा भिवानी डॉ. बृजपाल सिंह पप्पू व पवन ठाकुर भिवानी होंगे।

खबर संक्षेप

जनगणना ड्यूटियों पर शिक्षक नाराज हसला प्रधान डीसी को सौंपेंगे ज्ञापन

महेंद्रगढ़। हरियाणा स्कूल लेक्चरर्स संगठन हसला के जिला प्रधान अरविंद यादव माजरा ने कहा कि भारतीय जनगणना के प्रथम चरण के तहत मकान सूचीकरण और आवास गणना के लिए जिले में शिक्षकों की लगाई गई ड्यूटियों को लेकर शिक्षक वर्ग में नाराजगी है। उन्होंने बताया कि कई शिक्षकों की ड्यूटी उनके निवास स्थान और कार्य स्थल से 20 से 30 किलोमीटर दूर निर्धारित की गई है, जिससे उन्हें काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इस व्यवस्था को लेकर शिक्षकों में रोष है। अरविंद यादव माजरा ने कहा कि इन ड्यूटी से संबंधित विसंगतियों के समाधान के लिए हरियाणा स्कूल लेक्चरर्स संगठन हसला द्वारा 27 अप्रैल को जिला उपायुक्त अनुपमा अंजलि को ज्ञापन सौंपा जाएगा। संगठन प्रशासन को इस समस्या से अवगत कराते हुए उचित समाधान की मांग करेगा।

सीता नवमी के पर्व पर केमला के हनुमान मंदिर में हुआ भजन उपदेश कार्यक्रम

कनीना। विश्व हिंदू परिषद दुर्गा वाहिनी ने रविवार को सीता नवमी के अवसर पर केमला के हनुमान मंदिर में भजन उपदेश किए। वाहिनी संयोजिका दिव्या व बिमला ने जानकी सीता के चित्र के सामने दीप प्रज्ज्वलित किया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में नारी को संस्कारों की धुरी बताया गया है। जब जब समाज में आदर्शों की आवश्यकता हुई है, तब तब हम सीता जी जीवन चरित्र की ओर देखते हैं, जो धैर्य, त्याग, मर्यादा, संस्कार और राष्ट्र निर्माण की जीवंत प्रेरणा हैं। जिला संयोजक सरिता ने कहा कि पांच परिवर्तन स्व परिवर्तन, कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी भाव जरूरी हैं। इस मौके पर जिला प्रचार प्रसार प्रमुख सत्यनारायण, समाजसेवी डालचंद, मानवी, अंकिता, प्रियंका, हर्षित, सीमा, संगीता, सुमित्रा, सतबीर आदि मौजूद थे।

प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट ने अनाथ गोशाला में लगाई सवामणी व भंडारा

नारनौल। प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट के सौजन्य एवं गौसेवा मंडल के सहयोग से श्री अनाथ गोशाला में श्रद्धा और सेवा भाव के साथ गो भंडारा आयोजित किया गया। ट्रस्टी नरोत्तम सोनी ने बताया कि गो भंडारे का आयोजन डॉ. संजय शर्मा की पुत्री डॉ. छवि शर्मा, पुत्र मुकुल शर्मा व हिरेन शर्मा की ओर से किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में गोसेवकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अधिवक्ता एवं पर्यावरणविद केके शर्मा रहे, जबकि अध्यक्षता प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के प्रधान भीमसेन शर्मा व मुकेश वालिया ने संयुक्त रूप से की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि केके शर्मा ने कहा कि गोसेवा हमारी संस्कृति और आस्था का मूल आधार है, इसके संरक्षण से ही प्रकृति और मानवता का कल्याण संभव है। ट्रस्ट के अध्यक्ष ने कहा कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज में गोसेवा के प्रति जागरूकता फैलाना और लोगों को इस पुण्य कार्य से जोड़ना रहा है। गोसेवा न केवल धर्म है, बल्कि हमारा कर्तव्य भी है। मुकेश वालिया ने कहा कि गोसेवा से समाज में संवेदनशीलता और करुणा का भाव बढ़ता है, यह हमें हमारी जड़ों से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। इस मौके पर नरोत्तम सोनी, दिनेश शर्मा प्राचार्य, भीमसेन शर्मा, मुकुल शर्मा, हिरेन, छवि शर्मा सहित गोसेवक उपस्थित रहे।

मन की बात का 133वां एपिसोड जारी वैज्ञानिक ताकत पर हुई विस्तृत चर्चा

मंडी अटेली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात का 133 वां एपिसोड का लाइव कार्यक्रम अटेली क्षेत्र के गांव सराय बहादुर नगर में बूथ संख्या 185 पर ओबीसी मोर्चा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य प्रदीप सराय एवं भाजपा कार्यकर्ताओं ने ध्यानपूर्वक सुना। वहीं प्रधानमंत्री के मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात को अटेली क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर सुना गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के 133वें एपिसोड में देश की वैज्ञानिक ताकत और अंतरिक्ष उपलब्धियों पर जोरदार संदेश दिया। चुनावी हलचल के बीच भी उन्होंने जनता की भागीदारी और उपलब्धियों को रेखांकित किया। प्रधानमंत्री ने साफ कहा कि भारत ने हमेशा विज्ञान को विकास का हथियार माना है और आज वैज्ञानिकों की मेहनत से देश का अंतरिक्ष कार्यक्रम नई ऊंचाइयों को छू रहा है। जो राष्ट्र निर्माण की रीढ़ बन चुका है। वहीं इस समय देश में एक बड़ा और महत्वपूर्ण अभियान चल रहा है जिसके बारे में हर नागरिक को जानना जरूरी है। यह जनगणना अभियान है, जिसे दुनिया का सबसे बड़ा जनगणना अभ्यास माना जाता है। इस बार जनगणना 2027 को पूरी तरह डिजिटल बनाया गया है। अब सारी जानकारी डिजिटल माध्यम से सीधे रिकॉर्ड की जाएगी, जिससे प्रक्रिया ज्यादा तेज और पारदर्शी होगी।

आज गनियार में भंडारा

मंडी अटेली। अटेली क्षेत्र के गांव गनियार स्थित श्री हनुमान मंदिर में 27 अप्रैल को भव्य भंडारे का आयोजन किया जाएगा। इस धार्मिक आयोजन को लेकर गांव में उत्साह का माहौल है और तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। आज सुबह सवा आठ बजे कलश यात्रा एवं हवन का आयोजन किया जाएगा। वहीं भंडारे का शुभारंभ सुबह सवा 10 बजे से किया जाएगा। आयोजकों ने क्षेत्र के सभी श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर धार्मिक कार्यक्रम में भाग लेने और प्रसाद ग्रहण करने की अपील की है।

- सुबह आठ बजे होगा कलश यात्रा व हवन

आरपीएस वेटरनरी कॉलेज में मनाया पशु चिकित्सा दिवस

- भाषण प्रतियोगिता में पशु कल्याण: एक जिम्मेदारी और रोग रोकथाम में पशु चिकित्सक की भूमिका पर रखें प्रभावशाली विचार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

आरपीएस कॉलेज ऑफ वेटरनरी साइंसेज बलाना में विश्व पशु चिकित्सा दिवस मनाया गया। इस वर्ष की थीम पशु चिकित्सक भोजन और स्वास्थ्य के संरक्षक पर आधारित इस कार्यक्रम ने न केवल पशु चिकित्सकों के योगदान को रेखांकित किया, बल्कि समाज में उनके बहुआयामी महत्व को भी प्रदर्शित किया। कार्यक्रम के शुभारंभ पर मुख्यातिथि निदेशक डीसीसी पेट केयर डॉ. विनोद शर्मा थे। आरपीएस ग्रुप सीईओ इंजि. मनीष राव, रजिस्ट्रार डॉ. देवेन्द्र यादव, डीन डॉ. संदीप गेरा द्वारा द्वीप प्रज्वलन के साथ किया गया। संस्थान संस्थापक स्वर्गीय डॉ. ओपी यादव को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की, जिनकी सोच ने इस क्षेत्र में शिक्षा की नींव रखी। उत्सव की शुरुआत सुबह 9:30 बजे कॉलेज के पशु चिकित्सा नैदानिक परिसर में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच और टीकाकरण अभियान के साथ हुई। इस शिविर में पालतु एवं बेसहारा श्वानों को निःशुल्क टीकाकरण किया गया। डॉ. विनोद शर्मा ने पशु कल्याण के आधुनिक आयामों पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त, इंटास फार्मास्युटिकल्स के प्रतिनिधियों ने पशु चिकित्सा विज्ञान में नवीनतम तकनीकी प्रगति पर एक विशेष सत्र आयोजित किया। छात्रों की रचनात्मकता और वैचारिक स्पष्टता को परखने के लिए विभिन्न प्रतियोगिता को आयोजन किया गया। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में कुल 111 छात्रों ने हिस्सा लिया। वहीं भाषण प्रतियोगिता में छात्रों में पशु कल्याणः एक जिम्मेदारी और रोग रोकथाम में पशु चिकित्सक की भूमिका जैसे विषयों पर प्रभावशाली विचार रखे। कार्यक्रम के कन्वेनर डॉ. अभिषेक पाठक और डॉ. आस्था नागपाल ने बताया कि पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम अमल कृष्णा द्वितीय वर्ष, द्वितीय नव्या सूद तृतीय वर्ष, तृतीय मुस्कान प्रथम वर्ष एवं आर्यन द्वितीय वर्ष रहे। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम प्रिंयाशी हलदर तृतीय वर्ष, द्वितीय नेहा द्वितीय वर्ष, तृतीय खुशी तृतीय वर्ष रहे। सीईओ इंजि. मनीष राव ने बताया की दूरदर्शी नेतृत्व और गुणवतापूर्ण शिक्षा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के कारण ही आरपीएस कॉलेज आज आधुनिक प्रयोगशाला, अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे और उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण से लैस है।

महेंद्रगढ़। अतिथि का स्वागत करते हुए। फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर प्रो. एमओ कुरियन, प्रो. पीके सिंह, डॉ. सुभाष जांगडा, डॉ. एसके सोनी, डॉ. ओके रायना, प्रो. एससी यादव, डॉ. राजेश कुमार पारिक, डॉ. अरुण तनेजा, डॉ. रेनू यादव, डॉ. अंकुर उपाध्याय, डॉ. प्रशांत, डॉ. गरिमा पांडे, डॉ. कृतिका, डॉ. अथूल्या, डॉ. नवीना उपस्थित रहे।

क्रिकेट प्रतियोगिता में खेड़मा खोड़ विजेता

नारनौल। खिलाड़ियों से परिचय करते वासुदेव यादव। फोटो : हरिभूमि

नारनौल। गांव खोड़मा के स्टेडियम में जिला उपाध्यक्ष बीजेपी वासुदेव यादव ने टॉस करवाकर खोड़मा वॉरियर्स वर्सेस डायनामिक इलेवन टीमों के बीच क्रिकेट के मैच का सुभारम्भ करवाया। इसी दौरान सभी खिलाड़िओं का परिचय भी लिया गया। इस मैच में खोड़मा खोड़ वॉरियर्स विजेता रही, जिन्हें पुरस्कार स्वरुप ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस मौके पर सरपंच बहादुर सिंह, पंचायत सेक्टरी रोहित, प्रधान राहुल गुरैया, महावीर प्रसाद, सचिन खोड़मा, रोहित मस्त, पोलार्ड, दोनों टीमों के कैप्टन अजय व कपिल सहित खिलाड़ी मौजूद रहे। वासुदेव यादव ने उन्हें खेलों के महत्त्व की जानकारी देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा गांव के क्लब को माय भारत पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करवाने की सलाह दी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

प्रदर्शन सरकार के खिलाफ पिछले सात महीनों से कर्मी दे रहे धरना

एलसीएलओ कर्मचारियों का सीएम आवास घेरने का ऐलान, चुनाव बहिष्कार की चेतावनी

- सीपीएलओ का विज्ञापन निकालकर बिना काम व वेतन के एलसीएलओ बनाकर अधर में छोड़ा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। एलसीएलओ कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा में एलसीएलओ कर्मचारियों व सरकार के बीच तकरार गहराती जा रही है। पिछले सात महीनों से कुरुक्षेत्र में धरने पर बैठे इन युवाओं का गुस्सा अब सातवें आसमान पर पहुंच गया है। इस बारे में जानकारी देते हुए एलसीएलओ कर्मचारी यूनियन के राज्य प्रधान पवन डागर पलवल ने बताया कि एलसीएलओ यूनियन ने आर पार की लड़ाई का मन बना लिया है। उन्होंने बताया कि यूनियन ने दो बड़े फैसले लिए हैं, जिसके तहत एक मई मजदूर दिवस को प्रदेश भर के एलसीएलओ कर्मचारी कुरुक्षेत्र के पीपली में मुख्यमंत्री सैनी के आवास का घेराव करेंगे। यदि फिर भी समाधान नहीं हुआ, तो चार हजार एलसीएलओ कर्मचारी, उनके परिवार व रिश्तेदार आगामी चुनावों में मतदान नहीं करेंगे। यूनियन हर चुनाव से दूरी बनाएगी। इस बारे में जिला प्रधान दीपक व जिला उप प्रधान विनोद जांगड़ा ने बताया कि यह विवाद पदनाम बदलने और वेतन न मिलने से जुड़ा है। क्रीड (सीआरआईडी) के तहत सीपीएलओ पद के लिए परीक्षा ली गई थी, लेकिन चयन के बाद आधे युवाओं को सीपलएलओ बनाया गया, जबकि आधे का पदनाम बदलकर एलसीएलओ कर दिया गया। उन्होंने कहा कि एलसीएलओ को 18 महीने से न काम मिला है और ना वेतन तथा सीपीएलओ को मात्र छह हजार रुपये मिल रहे हैं। इस मसले को लेकर मुख्यमंत्री से 17 बार, मुख्य सचिव पांच बार, क्रीड विभाग के एसीएस से 10 बार, पंचायत मंत्री से चार बार, पंचायत विभाग से आठ बार और सीएम ओएसडी से 22 बार मुलाकात हो चुकी है, लेकिन आश्वासन के आलावा कुछ समाधान नहीं हुआ।

संघर्ष रहेगा जारी

उन्होंने कहा कि हमारा शोषण चरम पर है। विज्ञापन सीपीएलओ का निकाला गया और हमें बिना काम वेतन के एलसीएलओ बनाकर अधर में छोड़ दिया गया। जब तक हमें सीपीएलओ के समान पद और वेतन नहीं मिलता, संघर्ष यू ही जारी रहेगा। यूनियन ने साफ कर दिया है कि सीटू व सर्व कर्मचारी संघ और मिलकर एक बड़ा संयुक्त आंदोलन शुरू करेंगे। जिसकी जिम्मेदारी सीधे तौर पर प्रशासन और हरियाणा सरकार की होगी।